नामदेव रचनावली

संपादन

डॉ० गोविंद रजनीश

ISBN—978-81-88466-27-6

© डॉ० गोविंद रजनीश

प्रकाशक
अमरसत्य प्रकाशन
109, ब्लॉक बी, प्रीत विहार
दिल्ली-110092

संस्करण
2018

आवरण
रवि शर्मा

मूल्य
तीन सौ बीस रुपये

मुद्रक
बी० के० ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

NAAMDEV RACHANAVALI (*Hindi*)
Ed. by Dr. Govind Rajneesh
Price : ₹ 320

अनुक्रमणिका

जीवन-वृत्त	...	17
प्रस्तुत संस्करण	...	27
नामदेव की आध्यात्मिक मान्यताएँ	...	38
नामदेव : समकालीनों व परवर्ती रचनाकारों की दृष्टि में	...	50

पद-संग्रह : राग टोड़ी 53-67

1.	हरि नांउं हीरा हरि नांउ हीरा	...	53
2.	रांम नांम खेती रांम नांम बारी	...	53
3.	रांम सौ धंन ताकै कहा अब थोरौ	...	53
4.	मंझा प्रांन तू बीठला	...	54
5.	रांम रमें रंमि रांम संभारै	...	54
6.	रांम बोलै रांम बोलै	...	54
7.	रांम सनांमां रांम हीं नांमां	...	54
8.	जन नांमदेव पाया नांउं हरी	...	55
9.	रांम नांम जपिबौ श्रबननि सुनिबौ	...	55
10.	धिग्र ते बकता धिग्र ते सुरता	...	55
11.	आपनां पयांनां रांम आपनां पयांनां	...	55
12.	तू अगाध बैकुंठनाथा	...	56
13.	सबै चतुरता बरतैं अपनीं	...	56
14.	तेरी तेरी गति तूं हीं जांनैं	...	56
15.	मैं अपराधी बाप मैं अपराधी	...	56
16.	लोग एक अनंत बांणीं	...	57
17.	लोग कहै लौकांइ रे नांमां	...	57
18.	का करौं जाती का करौं पाती	...	57
19.	अैसैं मन रांम नांमैं बेधिला	...	58

20.	का नाचीला का गाईला	...	58
21.	रांम ची भगति दुहेली रे बापा	...	59
22.	जौ लग रांम नांमैं हित न भयौ	...	59
23.	काहे कूं कीजै ध्यांन जपनां	...	59
24.	भगत भला बाबा काडला	...	59
25.	साच कहूं तौ जीव जग मारै	...	60
26.	साईं मेरौ रीझै साचि	...	60
27.	रतन पारिखू नीरा रे	...	60
28.	कोन कै कलंक रह्यौ रांम नांम लेत ही	...	61
29.	रांम नांम नरहरि श्री बनवारी	...	61
30.	रांम जुहारि न और जुहारूं	...	61
31.	जा दिन भगता आईला	...	61
32.	संत सूं लीणां संत सूं दीणा	...	62
33.	परहरि धंधाकार सबैला	...	62
34.	माइ तूं मेरे बाप तूं	...	62
35.	माइ गोब्यंदा बाप गोब्यंदा	...	62
36.	हिरदै माला हिरदै गोपाला	...	62
37.	अब न बिसारूं रांम संभारूं	...	63
38.	रांम राइ उलगूं और न जांचू	...	63
39.	बीहूं बीहूं तेरी सबल माया	...	63
40.	बाजी रची बाप बाजी रची	...	63
41.	तूं न बिसारि तू न बिसारि	...	63
42.	बाप मंझा समझि न परई	...	64
43.	कैसैं तिरत बहु कुटिल भर्‌यौ	...	64
44.	काल भै बाण सह्या न जाई	...	64
45.	गरुड़ मंडल आव	...	65
46.	सहजैं सहजैं सब गुण गईला	...	65
47.	कैसैं न मिलै रांम रूढा मोटा	...	65
48.	कहा करौं जग देखत अंधा	...	65
49.	चूकि भजीला चूकि भजीला	...	66
50.	रांमैं नांमैं केलि अंब्रित बांनी	...	66

॥ राग टोड़ी ॥

1.

हरि नांउं हीरा हरि नांउं[1] हीरा।
हरि नांउं लेत मिटै सब पीरा ॥ टेक ॥
हरि नांउं जाती हरि नांउं पांती, हरि नांउं सकल जीवन मैं क्रांती ॥ 1 ॥
हरि नांउं सकल सुखन[2] की रासी, हरि नांउं काटै जंम की पासी ॥ 2 ॥
हरि नांउं सकल भवन ततसार, हरि नांउं नांमदेव उतरे पार[3] ॥ 3 ॥

2.

रांम नांम खेती रांम नांम बारी।
हमारै धंन बाबा बनवारी ॥ टेक ॥
या धन की देखौ अधिकाई, तसकर हरै न लागै काई ॥ 1 ॥
दह दिसि रांम रह्या[1] भर पूरि, संतनि नेयरै साखित दूरि ॥ 2 ॥
नांमदेव कहै मेरे करसंन[2] सोई, कूंत[3] मसाहति करै न कोई ॥ 3 ॥

3.

रांम सौ धंन ताकै कहा अब थोरौ।
अठ सिधि नवनिधि करत निहोरौ[1] ॥ टेक ॥
हरनाकसिब बध करि अध पति देई[2], यंद्र कौ विभौ प्रहिलाद न लेई ॥ 1 ॥
देव दांनव जाहि संपदा करि मांनैं, गोब्यंद सेवग ताहि आपदा करि जानैं ॥ 2 ॥
अरथ धर्म[3] कांम[4] की कहा मोखि मांगै, दास नांमदेव प्रेम भगति अंतरि जौ जागैं ॥ 3 ॥

---

1. पाठा०— 1. नांवं (क), 2. सूखन, 3. पारै। टि०–दादू द्वारा की पांडु० 'क' में यह पद 'राग गुंड' में दिया हुआ है।
2. पाठा०— 1. रह्यौ, 2. करसण(ग), करश्न, क्रिसन, 3. कूं (क), कतम साईसी (प्र०), कूंत मसाहति (वा०)। कू तम साहस (क ग) तथा (ना० की वा०)।
3. पाठा०— 1. निहौरौ (क), 2. अद्भुत देही (घु०, पंढर०), 3. धरम (क), ध्रम (ग), 4. कांमना (घ)।

4.

मंझा प्रांन तू बीठला।
पैड़ी[1] अटकी हो बाबुला॥ टेक॥
कलि खोटी कुसमल कलिकाल, बंधन मोचहु श्री गोपाल॥ 1॥
काटि नरांइण भौवे बंध[2], संम्रथ[3] दिढ करि वोडौ[4] कंध॥ 2॥
नांमदेव नांरांइण कीन्हीं सार, चले परोहन उतरे पार॥ 3॥

5.

राम रमें रंमि रांम संभारै।
मैं बलि ताकी छिन न बिसारै॥ टेक॥
रांम रमें रमि दीजै तारी, बैकुंठनाथ मिलै बनवारी[1]॥ 1॥
रांम रमें रंमि दीजै हेरी[2], लाज न कीजै पसवा केरी॥ 2॥
सरीर सभागा सो मोहि भावै, पार ब्रह्म का जे[3] गुण गावै॥ 3॥
सरीर धरे की इहै बडाई, नांमदेव रांम न बीसरि जाई॥ 4॥

6.

रांम बोलै रांम बोलै।
रांम बिनां को बोले रे भाई॥ टेक॥
एकल मीटी कुंजर चीटी, भंजन रे बहु नांनां।
थावर जंगम कीट पतंगा, सब घटि रांम समांनां॥ 1॥
एकल चिंता रहिले निता, छूटि ले सब आसा।
प्रणवंत नांमां भये निहकांमां, तुम्ह ठाकुर मैं दासा॥ 2॥

7.

रांम सनांमां रांम हीं नांमां।
तुम साहिब मैं सेवग स्वांमां॥ टेक॥
हरि सरवर जन तरंग कहावै, सेवग हरि तजि कहु[1] कत जावै॥ 1॥
हरि तरवर जन पंखी छाया, सेवग हरि भजि आप गंवाया॥ 2॥
नांमदेव कहै मैं नरहरि पाया, रांम रमें रमि रांम समाया॥ 3॥

---

4. पाठा०— 1. पड़ी, 2. भौचे फंध (क) भव के फंद (घु., सभा), बंधन (वा०), जग के बंध (ग), 3. स्मृथ, 4. औढो (वा०)।
5. पाठा०— 1. बनबारी, 2 हीरी (क), 3. जो (ग)।
7. पाठा०— 1. कंहू (क)।

8.

जन नांमदेव पाया[1] नांउं[2] हरी।
जंम आइ का करि है बौरे, अब मोरी छूटि परी॥ टेक॥
भाव भगति नांनां बिधि कीन्हीं, फल काको न करी।
केवल ब्रह्म निकटि ल्यौ लागी, मुकति कहा बपुरी॥ 1॥
नाम लेत सनिकादिक तारे, पार न पायौ[3] तास हरि।
नांमदेव कहै सुणौ रे संतौ, अब[4] मोहि समझि परी॥ 2॥

9.

रांम नांम जपिबौ श्रबननि सुनिबौ।
सलिल मोह मैं बहि नहीं जाइबौ॥ टेक॥
अकथ कथ्यौ न जाइ, कागद लिख्यौ न माइ[1]।
सकल भुवनपति मिल्यौ है सहज भाइ[2]॥ 1॥
रांम माता रांम पिता, रांम सबै जीव दाता।
भणत नांमईयौ छीपा[3], कहै रे पुकारि गीता॥ 2॥

10.

धिग्र ते बकता ध्रिग ते सुरता।
प्रांननांथ कौ नांउं न लेता॥ टेक॥
नाद बेद सब गालि पुरानां, रांम नांम कौ मरम न जांनां॥ 1॥
पंडित होइ सु बेद बखानैं, मूरिख नांमदेव रामहिं जांनैं॥ 2॥

11.

आपनां पयांनां राम आपनां पयांनां।
नांमदेव मूरिख लोग सयांना॥ टेक॥
जब हम हिरदै प्रीति बिचारी, रज बल छांडि भये भिखारी॥ 1॥
जब हरि क्रिपा करी हम जांनां, तब था चेरा अब भयौ रांनां॥ 2॥
नांमदेव कहै मैं नरहरि गाया, पद खोजत परमारथ पाया॥ 3॥

---

8. पाठा०— 1. पायौ (ग), 2. नांव, 3. पावै, 4. इब्रि (ग)।
9. पाठा०— 1. माई, 2. भाई, 3. छीपौ।

12.

तू अगाध बैकुंठनाथा।
तेरे चरनूं[1] मेरा माथा॥ टेक॥
सरबे भूंतं नांमां[2] पेखूं, जत्र जांऊं तत्र तू ही तू देखूं[3]॥ 1॥
जल थल महि थल काष्ट[4] पषांनां, आगम निगम बेद पुरांनां॥ 2॥
मैं मनिषा जनम निरबंध ज्वाला, नामां का ठाकुर दीनदयाला॥ 3॥

13.

सबै चतुरता बरतैं अपनीं।
अैसा न कोई निरपख[1] ह्वै खेलै, ताथैं मिटै अंतर की तपनीं॥ टेक॥
अंतर कुटिल रहत खेचर मति, ऊपरि मंजन करत दिन खपनीं।
अैसा न कोई सरबंगि पिछांनैं, प्रभू बिनां और रैंनि दिन सुपिनीं॥ 1॥
सोई साध सोई सुणि[2] ग्यांनीं, जाकी लागि रही ल्यौ रसनीं।
भणत नांमदेव तिनि थिति पाई, जाकै रांम नांम निज रटनीं॥ 2॥

14.

तेरी तेरी गति तूं हीं जांनैं।
अलप जीव गति कहा बखानैं॥ टेक॥
जैसा तूं कहियै तैसा तूं नांहीं, जैसा तूं है तैसा आछि गुसांई॥ 1॥
लूंण नीर थैं नां ह्वै न्यांरा, ठाकुर साहिब प्रांन हमारा॥ 2॥
साध की संगति संत सू[1] भेंटा, प्रणवंत नांमदेव रांम सहेटा[2]॥ 3॥

15.

मैं अपराधी बाप मैं अपराधी।
साचिली तुम्ह ची भगति न साधी॥ टेक॥
घणौं अग्यांन आगिनां भंगी, कीये कांम कुसंगा संगी॥ 1॥
यहु अग्यांन इहि परिघाठा, निखर कमाई न छूटै नाठा॥ 2॥
कीये खूंन गोब्यंद सब जांनैं, पौढा प्रबत मेर प्रवांनैं॥ 3॥

---

12. पाठा०—1. चरणां, चरणों, चरण, 2. नाना, 3. देखौं (क,ख,ग), पेखौं (पटि०, घुमान०), 4. कष्ट (क,ख,ग, पटि०, घुमान, सभा)।
13. पाठा०—1. निरख, 2. मुणि।
14. पाठा०—1. सौं, 2. सुहटा।

नर निरदोष नरांइण नांमीं, ए सब बंक अम्हंचा स्वांमीं ॥ 4 ॥
नरक निवारण नरहरि नांमां, कीयले मेक सरांहूं कांमां ॥ 5 ॥

16.

लोग[1] एक अनंत बांणीं।
मंझा जीवनि सारंग प्रांणीं ॥ टेक ॥
जिहि जिहि रंगैं लोग राता, ता रंगि जन न राचिला।
जिहि जिहि मारगि संसार जाइला, सो पंथ दूरैं बांचिला ॥ 1 ॥
निरबांणै पद कोई चीन्हैं, झूठै भरमि भुलाईला।
प्रणवंत नांमां परंम तत रे, सतगुरि निकटि बताईला ॥ 2 ॥

17.

लोग कहै लौकांइ रे नांमां।
षट दरसन कै निकटि न जाइबौ, भगति जाइगी जाइ रे नांमां ॥ टेक ॥
षट क्रम सहित विप्र आचारी, तिन सूं नांहि न मेरौ कांमां।
जौ[1] हरिदास सबनि थैं नीचे, तऊ कहैंगे केवल रांमां ॥ 1 ॥
अधम असोच भिष्ट बिभचारी, पुंडरीनाथ कौ लेहि जु नांमां।
वै सब बंध बरग मेरी जीवनि, तिनकै संगि कह्यौ मैं रांमां ॥2 ॥
गोस्ति लछि[2] बिप्र कूं दीजै, मन बंछित सब पुरवै[3] कांमां।
दास पटतरि तऊ न तूलै, भगति हेत जस गावै नांमां ॥ 3 ॥

18.

का करौं[1] जाती का करौं[2] पाती।
राजा रांम सेउं दिन राती ॥ टेक ॥

---

16. पाठा०— 1. लोक।
17. पाठा०— 1. जे, 2. गऊ लछि, गो शत, 3. पूरवन।
18. पाठा०— 1, 2. करूं।
टि० —यह पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में 'राग आसा' के अंतर्गत इस प्रकार दिया हुआ है—
कहा करउ जाती, कहा करउ पाती।
राम को नामु जपउ, दिन राती ॥ रहाउ ॥
मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती, मपि मपि काटउ जम की फासी।
रंगनि रांगउ सीवनि सीवउ, राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥ 2 ॥
भगति करउ हरि के गुन गावउ, आठ पहर अपना खसम धिआवउ ॥ 3 ॥
सुइने की सूई रुपे का धागा, नामे का चितु हरि सउ लागा ॥ 4 ॥

मन मेरौ गज जिभ्या मेरी काती, रांम रमें काटौं जम की पासी ॥ 1 ॥
सींवनां सीऊं हौं सींऊं ई सींऊं, रांम बिनां हूं कैसें जीऊं ॥ 2 ॥
अनंत नांउं क सीऊं बागा, जा सीवत जंम का डर भागा ॥ 3 ॥
सुरति की सूई; प्रेम का धागा, नांमां का मन हरि सूं लागा ॥ 4 ॥

19.

अैसें मन रांम नांमैं बेधिला[1]।
जैसें कनक तुला[2] चित राखिला[3] ॥ टेक ॥
आंनि लै कागदु[4] साजि लै गुडी[5], आकास मंडल छोडिला[6]।
पांच जनां सूं[7] बात बतऊवा, चित सूं डोरी राखिला[8] ॥ 1 ॥
आंनि लै कुंभ भराइ लै उदिक[9], राजकुंवार पुलंदरियै[10]।
हसत[11] बिनोद देत करताली[12], चित सूं गागरि राखिला[13] ॥ 2 ॥
मंदिर एक द्वार दस जाकै, गऊ चरावन चालिला[14]।
पांच कोस थैं चरि फिरि आवै[15], चित सूं बाछा राखिला ॥ 3 ॥
भगत नांमदेव सुणहु तिलोचन, बालिक पालणि पौढिला।
अपणैं मंदरि काज करंती, चित सूं बालिक राखिला[16] ॥ 4 ॥

20.

का नाचीला का गाईला[1]।
का गसि चंदन लाईला[2] ॥ टेक ॥
आपा पर नहीं चींन्हींला[3], तौ चितर चितारै डहकीला ॥ 1 ॥
क्रितम[4] आगैं नाचै लोई, स्वयंभू देव न चीन्हैं[5] कोई ॥ 2 ॥
स्यंभू देव की सेवा[6] जानैं, तौ दिब द्रिष्टि ह्वै सकल पिछांनैं ॥ 3 ॥
नांमदेव भणैं मेरे एक हीं पूजा, आतम रांम अवर नहीं दूजा ॥ 4 ॥

---

19. टि० — गुरु ग्रंथ साहिब में यह पद 'राग रामकली' में दिया हुआ है। रज्जब को 'सरबंगी' में यह 'राग गुंड' के अंतर्गत दिया गया है। अन्य सभी में राग टोड़ी में ही मिलता है।
पाठा०— 1. मनु राम नामा बेधीअले, 2. कला, 3. चितु मांडीअले, 4. आनीले कागदु, 5. काटीले गूडी, 6. मधे मरमीअले, 7. सिउ, 8. राखीअले, 9. ऊदक, 10. पुरंदरीए, पूरिधरियै, 11. हस्त, 12. बीचार करती है, 13. चीतु सु गागरि राखीअले, 14. छाडीअले, 15. पाँच कोस पर गऊ चरावत, 16. अंतरि बाहरि काज ब्रिरूधी चीतु सु बारिक राखीअले।
20. पाठा०— 1. का गाईला का नाचीला, 2. पूजीला, 3. जै आत्मारांम न पूजीला, 4. पीतमा, 5. पूजै, 6. पूजा।

21.

रांम ची भगति दुहेली रे बापा।
सकल निरंतर चीन्हि ले आपा॥ टेक॥
बाहर उजल भीतरि मैंला, पांणीं प्यंड पखालि न गहिला॥ 1॥
पुतली देव कि पाती देवा, इहि बिधि नांमदेव न जांनैं सेवा॥ 2॥
पाखंड भगति रांम नहीं रीझै, बाहरि अंधा लोग पतीजै॥ 3॥
नांमदेव भणैं मेरा नेत्र पलट्या, राम चरणां चित चिहुट्या॥ 4॥

22.

जौ लग रांम नांमैं हित न भयौ।
तौ लग मेरी मेरी करतां जनम गयौ॥ टेक॥
लागी पंक पंक लै धोवै, निरमल न होवै जनम बिगोवै॥ 1॥
भीतरि मैला बाहरि चोखा, पांणीं प्यंड पखालै धोखा॥ 2॥
नांमदेव कहै सुरहीं परहरियै, भेड पूंछ कैसैं भव जल तिरियै॥ 3॥

23.

काहे कूं[1] कीजै ध्यांन[2] जपनां।
जौ मन नांहीं सुध अपनां[3]॥ टेक॥
साप कांचली[4] छाडै विष[5] नहीं छाडै, उदिक मैं बग ध्यान[6] मांडै॥ 1॥
स्यंघ के भोजन कहा लुकांनां[7], सब झूठै देव पुजांनां[8]॥ 2॥
नांमदेव का स्वांमी[9] भांनिले झगरा[10], राम रसांइन पीव रे भगरा[11]॥ 3॥

24.

भगत भला बाबा काडला।
बिन परतीतैं पूजै सिला॥ टेक॥
न्हावै धोवै करै अस्नांन, हिरदै आंखि न माथैं कांन॥ 1॥
गलि पहरैं तुलसी की माला, अंतरगति कोइला सा काला[1]॥ 2॥
नांमदेव कहै ए पेटाबलू, भीतरि लाख ऊपरि हींगलू॥ 3॥

---

23. टि० — यह पद गुरु ग्रंथ साहिब में 'राग आसा' के अंतर्गत दिया हुआ है।
पाठा०— 1. कउ, 2. धिआनु, 3. जब ते सुधु नाही मनु अपना, 4. कुंच, 5. बिखु, 6. माहि जैसे बगु धिआनु मोडे, 7. सिंघच भोजनु जो नरु जानै, 8. ऐसे ही ठगदेउ बखानै, 9. नामे का सुआमी; 10. लाहि रे झगरा, मानिले झगरा, 11. दगरा।

24. पाठा०— 1. कारा।

25.

साच कहूं तौ जीव जग मारै।
एक अनेक आगैं नित हारै॥ टेक॥
साचै आखरि गोठि बिनासै[1], भाजै हाड अभावै हासै॥ 1॥
मन मैल की सुधि न जांणीं, साबण सिला सराहैं पांणीं॥ 2॥
उजल बांनां नीच सगाई, पाखंड भेष कीयै पति जाई॥ 3॥
अयस अग्यांनी उजल हूंवा[2], संसै गांठि पड़ी गलि मूवा॥ 4॥
नांमदेव कहै ए संख सरापी, पुंडरीनाथ न सुमिरैं पापी[3]॥ 5॥

26.